विचार बिन्दु

दानी कभी दुःख नहीं पाता, उसे कभी पाप नहीं घेरता। –ऋग्वेद

भामाशाह का अभूतपूर्व त्याग जिसे भुलाया नहीं जा सकता

भारतीय इतिहास त्याग, बलिदान और राष्ट्रभक्ति की असंख्य गाथाओं से भरा हुआ है। इनमें कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने स्वयं को नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज को सर्वोपरि माना। मेवाड़ की गौरवशाली धरती पर जन्मे दानवीर भामाशाह ऐसे ही महान विभूति थे, जिनका त्याग और समर्पण आज भी प्रेरणा का स्त्रोत है। यदि महाराणा प्रताप स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रतीक हैं, तो भामाशाह उस स्वाभिमान को जीवित रखने वाले आर्थिक आधार स्तंभ थे। उनका त्याग केवल धन दान करने तक सीमित नहीं था, बल्कि मातृभूमि के लिए सर्वस्व अर्पित करने की अनुपम मिसाल था।

राजस्थान में दानवीर भामाशाह की जयंती सामान्यतः 28 जून को मनाई जाती है। इतिहासकारों के अनुसार भामाशाह का जन्म 28 जून 1547 ई. को मेवाड़ के एक समृद्ध ओसवाल जैन परिवार में हुआ था। इस अवसर पर राजस्थान, विशेषकर मेवाड़ क्षेत्र में, विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा सामाजिक संस्थाओं द्वारा भामाशाह के त्याग, राष्ट्रभक्ति और दानवीरता को स्मरण करते हुए संगोष्ठियों, व्याख्यानों एवं सम्मान समारोहों का आयोजन किया जाता है। यह दिन नई पीढ़ी को राष्ट्रहित में त्याग, समर्पण और लोककल्याण की प्रेरणा देने का अवसर भी बन गया है।

सन् 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध हुआ। यद्यिप इस युद्ध में महाराणा प्रताप की वीरता ने मुगलों को कड़ी चुनौती दी, फिर भी मेवाड़ को भारी आर्थिक और सैन्य क्षित उठानी पड़ी। युद्ध के बाद महाराणा प्रताप को अपने परिवार सहित अरावली की दुर्गम पहाड़ियों और जंगलों में रहकर संघर्ष करना पड़ा। राज्य का खजाना खाली हो चुका था, सैनिकों के वेतन और रसद की व्यवस्था असंभव हो गई थी तथा स्वतंत्रता संग्राम का भविष्य संकट में दिखाई देने लगा था।

ऐसे कठिन समय में भामाशाह ने वह कार्य किया जिसने उन्हें इतिहास में अमर बना दिया। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि महाराणा प्रताप संसाधनों के अभाव में मेवाड़ छोड़ने का विचार कर रहे हैं, तब वे अपने भाई ताराचंद के साथ चूलिया ग्राम पहुँचे। वहाँ उन्होंने महाराणा प्रताप के समक्ष अपनी और अपने पूर्वजों की संचित सम्पूर्ण संपत्ति समर्पित कर दी। कहा जाता है कि इस दान में लाखों स्वर्ण मुद्राएँ, करोड़ों रुपये मूल्य की संपत्ति तथा बहुमूल्य रत्न और आभूषण सम्मिलित थे। यह धन इतना विशाल था कि उससे लगभग 25,000 सैनिकों की सेना का बारह वर्षों तक निर्वाह किया जा सकता था।

भामाशाह का यह दान केवल आर्थिक सहायता नहीं था, बल्कि राष्ट्रभक्ति और स्वामिभक्ति की सर्वोच्च अभिव्यक्ति थी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यह धन उनका व्यक्तिगत नहीं, बल्कि मेवाड़ की धरती का है और यदि यह मातृभूमि की रक्षा के काम नहीं आया तो इसका कोई महत्व नहीं। इस निस्वार्थ समर्पण ने महाराणा प्रताप को भावुक कर दिया। उनके संघर्ष को नया बल मिला और मेवाड़ की स्वतंत्रता की लौ फिर प्रज्ज्वलित हो उठी।

भामाशाह की महानता केवल दानवीरता तक सीमित नहीं थी। वे एक साहसी सेनानायक भी थे। हल्दीघाटी के युद्ध में उन्होंने वीरतापूर्वक भाग लिया तथा बाद के वर्षों में मालवा और गुजरात क्षेत्र में मुगल छावनियों पर सफल छापामार अभियान चलाए। इन अभियानों से प्राप्त संसाधनों ने भी मेवाड़ की शक्ति को सुदृढ़ किया। मुगल सम्राट अकबर ने उन्हें अपने पक्ष में करने के लिए उच्च पद और सम्मान का प्रलोभन दिया, किंतु भामाशाह ने इसे ठुकरा दिया।

भामाशाह के इस योगदान का प्रभाव अत्यंत दूरगामी सिद्ध हुआ। उनके द्वारा उपलब्ध कराए गए संसाधनों से महाराणा प्रताप ने सेना का पुनर्गठन किया, नए सैनिकों की भर्ती की, हथियारों और रसद की व्यवस्था की तथा छापामार युद्ध को और प्रभावी बनाया। परिणामस्वरूप 1582 में दिवेर के युद्ध में मेवाड़ को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई। इसके बाद मुगलों की अनेक चौकियाँ नष्ट कर दी गईं और चित्तौड़गढ़ व मांडलगढ़ को छोड़कर मेवाड़ का अधिकांश क्षेत्र पुनः स्वतंत्र हो गया। यदि भामाशाह का सहयोग न मिला होता, तो संभवतः मेवाड़ का स्वतंत्रता संघर्ष इतनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

भामाशाह की महानता केवल दानवीरता तक सीमित नहीं थी। वे एक साहसी सेनानायक भी थे। हल्दीघाटी के युद्ध में उन्होंने वीरतापूर्वक भाग लिया तथा बाद के वर्षों में मालवा और गुजरात क्षेत्र में मुगल छावनियों पर सफल छापामार अभियान चलाए। इन अभियानों से प्राप्त संसाधनों ने भी मेवाड़ की शक्ति को सुदृढ़ किया। मुगल सम्राट अकबर ने उन्हें अपने पक्ष में करने के लिए उच्च पद और सम्मान का प्रलोभन दिया, किंतु भामाशाह ने इसे ठुकरा दिया। उनके लिए राष्ट्र और स्वाभिमान किसी भी पद या वैभव से अधिक महत्वपूर्ण थे।

भामाशाह के जीवन का एक अन्य प्रेरणादायक पक्ष उनकी दूरदर्शिता थी। उन्होंने केवल अपने जीवनकाल में ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मेवाड़ की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित की। उनके पुत्र जीवाशाह और पौत्र अक्षयराज ने भी मेवाड़ के प्रधान के रूप में राज्य की सेवा की। इस प्रकार भामाशाह का परिवार कई पीढ़ियों तक मेवाड़ की रीढ़ बना रहा।

भामाशाह की महानता केवल उनके अभूतपूर्व दान तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनकी विरासत भी उतनी ही प्रेरणादायक है। आज भी भारत में जब कोई व्यक्ति समाज कल्याण, शिक्षा, चिकित्सा अथवा किसी राष्ट्रीय संकट के समय उदारतापूर्वक बड़ा योगदान देता है, तो उसे सम्मानपूर्वक 'भामाशाह' की उपाधि दी जाती है। यह उनके नाम की अमर प्रतिष्ठा और भारतीय जनमानस में उनके प्रति श्रद्धा का प्रमाण है। राजस्थान सरकार ने भी उनके सम्मान में 'भामाशाह योजना' प्रारम्भ कर उनके योगदान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास किया। भामाशाह के वंशज आज भी उदयपुर में निवास करते हैं और समाज में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भामाशाह ने केवल अपनी संपत्ति ही मेवाड़ को समर्पित नहीं की, बल्कि राष्ट्रसेवा, निष्ठा और त्याग के ऐसे संस्कार स्थापित किए जिनके कारण उनकी आने वाली पीढ़ियाँ भी सदियों तक मेवाड़ राज्य की प्रशासनिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ बनी रहीं। इस दृष्टि से भामाशाह केवल एक दानवीर नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की एक जीवंत परंपरा के प्रवर्तक थे।

वर्तमान समय में जब समाज में स्वार्थ और भौतिकता का प्रभाव बढ़ता दिखाई देता है, तब भामाशाह का जीवन हमें यह संदेश देता है कि सच्चा वैभव संग्रह में नहीं, बल्कि समर्पण में है। राष्ट्र की रक्षा केवल तलवार से नहीं होती, बल्कि त्याग, सहयोग, निष्ठा और आर्थिक योगदान से भी होती है। भामाशाह ने अपने आचरण से यह सिद्ध किया कि धन तभी सार्थक है जब वह समाज और मातृभूमि के काम आए।

दानवीर भामाशाह का त्याग भारतीय इतिहास का ऐसा स्वर्णिम अध्याय है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रप्रेम, उदारता और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देता रहेगा। वास्तव में, भामाशाह केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि त्याग और समर्पण की अमर परंपरा का नाम हैं।

–अतिथि सम्पादक,
प्रोफेसर (डॉ.) पी. सी. कंठालिया,
विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञानं) एवं मुख्य वैज्ञानिक,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

राशिफल शुक्रवार 19 जून, 2026

पंडित अनिल शर्मा

द्वितीय ज्येष्ठ मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, आश्लेषा नक्षत्र दिन 10:07 तक, हर्षण योग दिन 2:53 तक, बव करण प्रातः 5:59 तक, चन्द्रमा आज दिन 10:07 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मेष, बुध–मिथुन, गुरू–कर्क, शुक्र–कर्क, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज कुमार योग दिन 10:07 से सूर्योदय तक है। रवियोग दिन 10:07 से आरम्भ होगा। आज श्रुति पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:20 तक, लाभ अमृत 7:20 से 10:45 तक, शुभ 12:28 से 2:11 तक, शुभ 5:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेष

परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है।

सिंह

मानसिक तनाव दूर होगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु
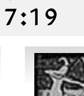
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज व्यावसायिक/आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

कन्या
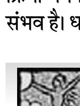
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धन हानि का भय है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
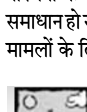
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मीन
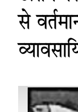
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

सेवा शिविर : राजस्थान में गुड गवर्नेंस का नया अध्याय

आमजन की समस्याओं का मौके पर समाधान ही सुशासन की असली पहचान

अरुण चतुर्वेदी

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की सफलता योजनाएँ बनाने के साथ ही उन योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक समयबद्ध, पारदर्शी और सहज तरीके से पहुँचाने से मापी जाती है। जब नागरिक को अपनी छोटी–छोटी समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ें, बल्कि सरकार स्वयं उसके द्वार तक पहुँचकर समाधान उपलब्ध कराए, तब उसे वास्तविक अर्थों में गुड गवर्नेंस (सुशासन) कहा जा सकता है। राजस्थान में आयोजित सेवा शिविर इसी सोच का सशक्त उदाहरण बनकर उभरे हैं। आमजन की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण के मूल मंत्र के साथ आयोजित ये शिविर प्रशासन को जनोन्मुखी, जवाबदेह और संवेदनशील बनाने की दिशा में एक उल्लेखनीय पहल हैं।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की पहल पर राज्य सरकार ने 12 जून से 15 जुलाई, 2026 तक आयोजित ग्रामीण एवं शहरी सेवा शिविरों के माध्यम से प्रशासन को जनता के द्वार तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इन शिविरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन शिविरों में केवल शिकायतें सुनने की औपचारिकता नहीं, बल्कि संबंधित विभागों के अधिकारियों की उपस्थिति में तत्काल समाधान सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है। यही कारण है कि ये शिविर प्रशासनिक सुधार और सुशासन की अवधारणा को व्यवहारिक रूप देते दिखाई देते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित सेवा शिविरों का दायरा अत्यंत व्यापक रखा गया है। राजस्व अभिलेखों एवं खातों का शुद्धिकरण, खातों का विभाजन, रास्तों से अतिक्रमण हटाना, नामांतरण, सरकारी एवं चारागाह भूमि से अवैध कब्जे हटाना, भूमिहीन किसानों को भूमि आवंटन, खातेदारी अधिकार प्रदान करना तथा सीमांकन जैसी वर्षों से लंबित समस्याओं का मौके पर समाधान किया जा रहा है। ग्रामीण परिवारों के लिए जाति, मूल निवास, आय सहित विभिन्न प्रकार के प्रमाण–पत्र जारी करने जैसी सेवाएँ भी एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। इससे नागरिकों का समय, श्रम और आर्थिक व्यय तीनों की बचत हो रही है।

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के पात्र परिवारों का चयन, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लाभार्थियों का सत्यापन तथा जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित पात्र व्यक्तियों का पंजीकरण भी इन शिविरों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विशेष रूप से दिव्यांगजन, वृद्धजन, विधवा महिलाओं और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सरकारी सहायता योजनाओं से जोड़ने का प्रयास सामाजिक समावेशन की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

राजस्थान जैसे कृषि प्रधान राज्य में किसानों और पशुपालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सेवा शिविरों में कृषि एवं पशुपालन विभाग की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई है। पशु स्वास्थ्य शिविर, टीकाकरण, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के अंतर्गत बीमा पात्रता की जांच, किसान लाभार्थियों का सत्यापन तथा सिंचाई और जल प्रबंधन से जुड़े मामलों का निस्तारण किसानों के लिए बड़ी राहत लेकर आया है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलने के साथ–साथ किसानों का सरकारी व्यवस्था पर विश्वास भी बढ़ता है।

बिजली, पेयजल और आधारभूत सुविधाओं से जुड़े मामलों का समाधान भी इन शिविरों की प्रमुख उपलब्धि है। विद्युत आपूर्ति, ट्रांसफार्मर, विद्युत कनेक्शन, जल गुणवत्ता, पाइपलाइन लीकेज तथा हैंडपंप मरम्मत जैसे विषयों पर संबंधित विभागों के अधिकारी मौके पर ही कार्रवाई कर रहे हैं। ग्रामीण सड़कों और सरकारी भवनों की मरम्मत के प्रस्ताव भी तैयार किए जा रहे हैं। इससे विकास कार्यों में गति आने की संभावना बढ़ती है।

स्वास्थ्य सेवाओं को भी इन शिविरों का अभिन्न अंग बनाया गया है। निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, आवश्यक दवाओं का वितरण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य जांच, कैंसर एवं सिकल सेल स्क्रीनिंग, टीबी जांच, टीकाकरण तथा आयुष्मान भारत कार्ड वितरण जैसी सेवाएँ नागरिकों को एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। स्वास्थ्य सेवाओं का यह विकेन्द्रीकरण ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

शिक्षा और महिला सशक्तिकरण से जुड़े विषयों को भी सेवा शिविरों में पर्याप्त महत्व दिया गया है। पालनहार योजना, छात्रवृत्ति संबंधी समस्याओं का समाधान, विद्यालय भूमि से अतिक्रमण हटाना, लाडो प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह अनुदान योजना, वन स्टॉप सेंटर, इंदिरा रसोई, शिक्षा सेतु तथा प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना जैसी योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक पहुँचाने का प्रयास प्रशासन की संवेदनशीलता को दर्शाता है।

शहरी सेवा शिविरों में नगर निकायों से जुड़ी नागरिक सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। फ्री होल्ड और लीज होल्ड पट्टों का निस्तारण, सड़क मरम्मत, स्ट्रीट लाइटों की दुरुस्ती, नालियों और सीवरेज लाइन की मरम्मत, जन्म–मृत्यु प्रमाण पत्र, विवाह पंजीयन, फायर एनओसी, ट्रेड लाइसेंस, साइनेज लाइसेंस, भवन नक्शा अनुमोदन और अन्य शहरी सेवाओं का त्वरित निस्तारण नगरवासियों के लिए बड़ी राहत है। वर्षों से लंबित अनेक प्रकरणों के समाधान के लिए शिविरों में विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

शहरी क्षेत्रों में विभिन्न फ्लैटों एवं भूखंडों से जुड़े लीज मामलों में ब्याज एवं शास्ति में छूट जैसी व्यवस्थाएँ नागरिकों को राहत प्रदान करती हैं। मुख्यमंत्री निःशुल्क बिजली योजना, कुसुम योजना तथा अन्य सरकारी योजनाओं के आवेदन भी शिविरों में स्वीकार किए जा रहे हैं। इससे नागरिकों को अलग–अलग कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं रहती।

इन सेवा शिविरों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष प्रशासनिक समन्वय है। सामान्यतः नागरिक की समस्या एक विभाग तक सीमित नहीं होती। कई बार एक ही प्रकरण में राजस्व, पंचायत, बिजली, जलदाय, चिकित्सा, सामाजिक न्याय और स्थानीय निकाय जैसे अनेक विभाग जुड़े होते हैं। सेवा शिविरों में सभी विभागों की संयुक्त उपस्थिति के कारण समस्याओं का समाधान अपेक्षाकृत तेज़ी से संभव हो पाता है। यह व्यवस्था सिंगल विंडो गवर्नेंस की अवधारणा को मजबूत करती है।

सुशासन के अंतरराष्ट्रीय मानकों में पारदर्शिता, जवाबदेही, सहभागिता, दक्षता और समयबद्ध सेवा वितरण को महत्वपूर्ण माना जाता है। राजस्थान के सेवा शिविर इन सभी तत्वों को व्यवहार में उतारने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। नागरिकों को उनके अधिकारों और योजनाओं की जानकारी देना, पात्र व्यक्तियों को योजनाओं से जोड़ना तथा शिकायतों का मौके पर समाधान करना प्रशासनिक जवाबदेही का परिचायक है।

हालांकि, इन शिविरों की दीर्घकालिक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि शिविरों में किए गए निर्णयों का क्रियान्वयन कितनी गंभीरता से किया जाता है। केवल आवेदन स्वीकार कर लेना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि प्रत्येक प्रकरण की डिजिटल मॉनिटरिंग, समयबद्ध अनुपालन और जनसंतुष्टि का स्वतंत्र मूल्यांकन भी आवश्यक होगा। यदि शिविरों के दौरान प्राप्त शिकायतों और उनके समाधान का डेटा सार्वजनिक किया जाए तथा नियमित समीक्षा हो, तो यह पहल और अधिक प्रभावी बन सकती है।

भविष्य में इन सेवा शिविरों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिकायत प्रबंधन, ऑनलाइन ट्रैकिंग, मोबाइल एप, डिजिटल दस्तावेज़ सत्यापन और जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी से और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। इससे पारदर्शिता बढ़ेगी तथा नागरिकों का विश्वास और मजबूत होगा।

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने यह स्पष्ट किया है कि उनके शासन की सफलता का वास्तविक पैमाना योजनाओं की घोषणा नहीं, बल्कि अंतिम व्यक्ति तक उनका प्रभावी क्रियान्वयन है। यही सोच सेवा शिविरों के संचालन में भी दिखाई देती है। स्वयं शिविरों में पहुँचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण करना, अधिकारियों को मौके पर निर्देश देना तथा नागरिकों से सीधे संवाद स्थापित करना उनकी कार्यशैली का महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। इससे प्रशासनिक मशीनरी को यह संदेश मिला है कि सरकार परिणामोन्मुखी कार्य संस्कृति और जवाबदेह प्रशासन के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। यही कारण है कि सेवा शिविर राजस्थान में "संवेदनशील प्रशासन, जवाबदेह शासन और प्रभावी गुड गवर्नेंस" के मॉडल के रूप में स्थापित होते दिखाई दे रहे हैं।

राजस्थान के सेवा शिविर केवल प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनकेंद्रित शासन दर्शन का सशक्त उदाहरण हैं। जब सरकार स्वयं नागरिकों तक पहुँचकर उनकी समस्याओं का समयबद्ध समाधान करती है, तब लोकतंत्र की वास्तविक भावना साकार होती है। यह पहल निरंतरता, प्रभावी निगरानी और जवाबदेही के साथ आगे बढ़कर न केवल राजस्थान बल्कि देश के अन्य राज्यों के लिए भी गुड गवर्नेंस का एक अनुकरणीय मॉडल बन सकती है। वास्तव में, सुशासन का उद्देश्य यही है कि शासन नागरिक के जीवन को सरल, सहज और सम्मानजनक बनाये और सेवा शिविर इस दिशा में एक महत्वपूर्ण और सार्थक कदम सिद्ध हो रहे हैं।

–अरुण चतुर्वेदी,
अध्यक्ष, राज्य वित्त आयोग

आगमग्रंथ उद्भव दिवस : श्रुत पंचमी

तीर्थंकर महावीर की दिव्यदेशना को लिपिबद्ध कर जन-जन तक पहुंचाने का महान दिवस

धर्म की सच्ची सेवा है ज्ञान की रक्षा और उसका प्रसार

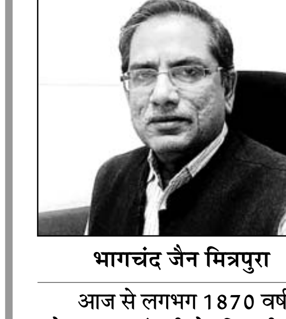
भागचंद जैन मित्रपुरा

आज से लगभग 1870 वर्ष पूर्व ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन तीर्थंकर महावीर की दिव्य वाणी को श्रुत परंपरा के आधार पर षट्खण्डागम ठांथ के रूप में लिपिबद्ध कर भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया गया था। इसी कारण यह दिवस श्रुत पंचमी के रूप में मनाया जाता है। यह ग्रंथ प्राकृत भाषा में रचित है, इसलिए इस दिन को प्राकृत भाषा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। यह दिवस आगम ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने का प्रेरणादायी अवसर है।

जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकरों को केवलज्ञान प्राप्त होने के पश्चात उनकी दिव्यध्वनि प्रतिदिन पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न एवं अर्धरात्रि में चार बार, छह–छह घड़ी तक अठारह महाभाषाओं और सात सौ लघुभाषाओं में प्रवाहित होती है। समवशरण में उपस्थित सभी प्रकार के जीव इसे अपनी–अपनी भाषा में समझ लेते हैं।

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की वाणी श्रुत रूप में संरक्षित रही, जिसका प्रवाह गौतम स्वामी, सुधर्म स्वामी, जम्बू स्वामी से लेकर अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी तक निरंतर चलता रहा। वर्षों तक उनकी दिव्यदेशना आचार्यों, मुनियों और विद्वानों द्वारा स्मरण शक्ति के आधार पर जनमानस में प्रचलित रही। कालांतर में क्षयोपशमिक ज्ञान की मंदता बढ़ने लगी, आचार्यों की स्मरणशक्ति क्षीण होने लगी तथा अंग एवं पूर्व ज्ञान का क्रमशः ह्रास होने लगा।

भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग 683 वर्ष पश्चात जब अंगों और पूर्वों का शेष ज्ञान भी लुप्त होने की स्थिति में पहुँच गया, तब आचार्य धरसेन ने इस गंभीर परिस्थिति को समझा। उन्होंने अनुभव किया कि बुद्धि एवं स्मरणशक्ति के निरंतर ह्रास के कारण श्रुत परंपरा केवल मौखिक रूप में सुरक्षित नहीं रह सकती।

नंदीसंघ की प्राकृत पट्टावली के अनुसार श्रुत का प्रवाह इस प्रकार रहा है :–

केवली काल	62 वर्ष
श्रुत केवली काल	100 वर्ष
10 पूर्वधारी काल।	183 वर्ष
11 अंगधारी काल	123 वर्ष
10/9/8 अंगधारी काल	97 वर्ष
कुल	**565 वर्ष**
1 अंगधारी काल	
अर्हतबलि	28 वर्ष
माधनंदी	21 वर्ष
कुल	**614 वर्ष**
धरसेन	19 वर्ष
पुष्पदंत	30 वर्ष
भूतबलि	20 वर्ष
कुल	**683 वर्ष**

तीर्थंकर महावीर निर्वाण के 683 वर्ष पश्चात् श्रुत के आधार पर दिगम्बर जैन धर्म का आधारभूत ग्रंथ षट्खण्डागम ताड़पत्रों में लिपिबद्ध हुआ।

आचार्य धरसेन, जो 'क्षीणांग' के धारक थे, ने अपनी अल्पायु का सदुपयोग करते हुए शेष ज्ञान को लिपिबद्ध कराने का निर्णय लिया। उन्होंने महिमा नगरी में आयोजित मुनि सम्मेलन से दो योग्य मुनियों–आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबलि–को उनकी विद्वत्ता के आधार पर अपने निवास स्थल गिरनार पर्वत (गुजरात) स्थित चंद्रगुफा में बुलाया और अपनी स्मृति में सुरक्षित संपूर्ण श्रुतज्ञान उन्हें प्रदान किया।

इसके फलस्वरूप आचार्य पुष्पदंत ने प्रथम खंड की रचना की तथा उनके शरीरांत के पश्चात शेष पाँच खंडों की रचना आचार्य भूतबलि ने पूर्ण की। इस प्रकार छह खंडों से युक्त षट्खण्डागम ग्रंथ का सृजन हुआ। यह ग्रंथ आचार्य धरसेन के मौखिक उपदेशों पर आधारित है, जिसे ताड़पत्रों पर लिपिबद्ध किया गया। मूल षट्खण्डागम ग्रन्थ आज भी मूढ़बद्री में सुरक्षित है।

ईस्वी सन् 156 में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन चतुर्विध संघ एवं देवों द्वारा इस महान ग्रंथ की पूजा–अर्चना की गई तथा इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा गया। तभी से यह तिथि श्रुत पंचमी के नाम से विख्यात हुई।

आज षट्खण्डागम दिगम्बर जैन परंपरा का सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण आगम ग्रंथ माना जाता है। यह छः खण्डों में लिपिबद्ध हुआ है।

षट्खण्डागम के छह खंड

जीवस्थान (जीवट्ठाण), क्षुद्रकबन्ध (खुद्दाबंध), बन्धस्वामित्व (बंधसामित्तिवचय), वेदना (वेयणा), वर्गणा (वग्गणा), महाबन्ध।

षट्खण्डागम के प्रथम तीन खंड आत्मा के दृष्टिकोण से कर्मबन्ध का विवेचन करते हैं, जबकि अंतिम तीन खंड कर्मों की प्रकृति, स्वरूप और सीमाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

पंचपरमेष्ठी की आराधना का आधार णमोकार महामंत्र, जिसे विश्वशांति मंत्र भी कहा जाता है, इस महान ग्रंथ का मंगलाचरण है।

इस ग्रंथ पर आचार्य कुंदकुंद एवं आचार्य समंतभद्र जैसे महान आचार्यों ने टीकाएँ लिखीं, जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में आचार्य वीरसेन स्वामी (आठवीं शताब्दी) द्वारा रचित धवला टीका उपलब्ध है, जो षट्खण्डागम की महत्वपूर्ण व्याख्या मानी जाती है।

हम प्रायः पूजा–पाठ को ही धर्म मान लेते हैं, जबकि जिनवाणी हमें सिखाती है कि ज्ञानपूर्वक की गई क्रिया ही फलदायी होती है। यदि हम पूजापाठ में निहित अध्यात्म तत्व को समझने और आत्मसात करने का प्रयास करें, तभी हम सच्चे अर्थों में जिनवाणी की सेवा कर सकेंगे।

आज आवश्यकता है कि मंदिरों की अलमारियों में बंद आगम ग्रंथों को अध्ययन, स्वाध्याय, शास्त्रचर्चा, वार्तिक एवं वचनिकाओं के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया जाए। आधुनिक तकनीकी युग में "आधुनिकता के साथ अध्यात्म का संगम" की भावना को अपनाते हुए जिनवाणी को अधिकृत डिजिटल मंचों पर उपलब्ध कराना समय की मांग है।

जैन धर्म में देव, शास्त्र और गुरु की आराधना का विशेष महत्व है। जिनवाणी की पूजा–अर्चना के साथ–साथ शास्त्र भंडारों का संरक्षण, रखरखाव एवं सुरक्षा भी आवश्यक है। इतिहास साक्षी है कि अनेक धर्मग्रंथ विभिन्न कारणों से नष्ट या विलुप्त हो गए। अतः प्रत्येक धर्मानुयायी को स्वाध्याय का नियम लेकर शास्त्रों का सदुपयोग एवं संरक्षण करना चाहिए।

समग्र जैन समाज आचार्य धरसेन, आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबलि की दूरदृष्टि, त्याग, तपस्या और पुरुषार्थ का चिरऋणी है। वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को इन त्रि–आचार्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए तीर्थंकर महावीर की वाणी को स्वाध्याय, चिंतन और मनन के माध्यम से सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का संकल्प लेना चाहिए।

जिनवाणी ही हमारे जीवन–नौका की सच्ची खेवैया है।

श्रुत पंचमी का उद्देश्य–श्रुत पंचमी का मुख्य उद्देश्य तीर्थंकर महावीर की वाणी को सुरक्षित रखना तथा आगम ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाना है।

श्रुत पंचमी का संदेश–श्रुत पंचमी हमें यह संदेश देती है कि ज्ञान की रक्षा और उसका प्रसार प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। यह दिन आचार्य धरसेन, आचार्य पुष्पदंत और आचार्य भूतबलि की दूरदृष्टि एवं त्याग का स्मरण कराता है, जिन्होंने भगवान महावीर की वाणी को लिपिबद्ध कर अमर बना दिया।

श्रुत पंचमी के अवसर पर शास्त्रों की साफ–सफाई की जाती है, उनकी पूजा–अर्चना की जाती है तथा जिनवाणी की रथयात्राएँ निकाली जाती हैं। साथ ही महावीर की वाणी को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लेकर अपनी आध्यात्मिक विरासत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

संकलन- भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

हल्दीघाटी विजय दिवस पर स्थापित ध्वज गुरुवार को जयकारों के साथ उतारा

उदयपुर (का.स.)। हल्दीघाटी विजय सार्द्ध चतुरू शती समारोह के वर्ष भर के आयोजन सम्पन्न होने के साथ ही प्रताप गौरव केन्द्र श्राष्ट्रीय तीर्थश् में पिछले वर्ष हल्दीघाटी विजय दिवस पर स्थापित किया गया ध्वज गुरुवार को जयकारों के साथ उतारा गया।

प्रताप गौरव केन्द्र के निदेशक अनुराग सक्सेना ने बताया कि वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी युद्ध विजय के 450वें वर्ष के तहत पिछले वर्ष 18 जून को हल्दीघाटी विजय दिवस पर हल्दीघाटी से उदयपुर तक हल्दीघाटी विजय संदेश यात्रा निकाली गई थी। इससे पूर्व खेड़ा देवी मंदिर परिसर में राष्ट्र चेतना यज्ञ हुआ था। हल्दीघाटी विजय संदेश यात्रा के प्रताप गौरव केन्द्र पहुंचने के बाद हल्दीघाटी की माटी के कलश और ध्वज को प्रताप गौरव केन्द्र परिसर में स्थापित किया गया था।

सक्सेना ने बताया कि हल्दीघाटी विजय के संदेश को वर्ष भर विश्व में गुंजाने के संकल्प के तहत पूरे वर्ष विभिन्न आयोजन हुए। सौभाग्य से इस वर्ष 18 जून से ठीक एक दिन पहले ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया पर महाराणा प्रताप जयंती भी आई और विशाल राष्ट्र चेतना संकल्प सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत का उद्बोधन प्राप्त हुआ। वर्ष भर के आयोजनों के समापन के तहत गुरुवार को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति के अध्यक्ष प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, महामंत्री दीपक कुमार शुक्ल, महावीर चपलोत सहित अन्य पदाधिकारियोंए सदस्यों की उपस्थिति में महाराणा प्रताप के जयकारों के साथ ध्वजावतरण किया गया।